Answers to RHA–DS2/Set-3

1. (*i*) (ख) शिक्षा
   (*ii*) (घ) सर्वांगीण
   (*iii*) (क) कथन (A) और (B) दोनों सही हैं।
   (*iv*) (क) मस्तिष्क का सही उपयोग संभव हो पाता है।
   (*v*) (क) पुस्तकें ज्ञान का स्त्रोत हैं।
2. (*i*) (ग) बाल
   (*ii*) (क) मोतियों की माला
   (*iii*) (क) अपनी माँ को
   (*iv*) (घ) कथन (A) सही है और कारण (R) उसकी गलत व्याख्या है।
   (*v*) (घ) इनमें से कोई नहीं
3. (*i*) (ग) (1) और (3)
   (*ii*) (घ) कथन (A) सरल और कथन (B) मिश्र वाक्य है।
   (*iii*) (ख) (1) और, (2) जब, तब।
   (*iv*) (ग) एवं
   (*v*) (क) 1–(*iii*), 2–(*i*), 3–(*ii*)
4. (*i*) (क) कर्म की प्रधानता, कर्ता की प्रधानता
   (*ii*) (क) सकर्मक और अकर्मक क्रियाएँ हो सकती हैं।
   (*iii*) (क) (1) कर्तृवाच्य का उदाहरण है। (2) उसका कर्मवाच्य में रूपांतरण है।
   (*iv*) (घ) (1) कर्तृवाच्य, (2) कर्मवाच्य
   (*v*) (ग) (2) और (3) सही हैं।
5. (*i*) (ख) तेज़
   (*ii*) (ख) अकर्मक क्रिया, पुल्लिग, एकवचन, वर्तमानकाल
   (*iii*) (क) संख्यावाचक, कक्षा, स्त्रीलिंग
   (*iv*) (ग) कठिन
   (*v*) (क) अनिश्चयवाचक सर्वनाम, पुल्लिग, एकवचन, कर्ता कारक
6. (*i*) (घ) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं।
   (*ii*) (ग) 1–(*iii*), 2–(*i*), 3–(*ii*)
   (*iii*) (ग) मानवीकरण
   (*iv*) (ख) उपमेय में उपमान की संभावना होने पर उत्प्रेक्षा अलंकार होता है।
   (*v*) (ग) (1) में, मानवीकरण (2) में उत्प्रेक्षा और (3) में अतिशयोक्ति अलंकार है।

7. (*i*) (क) अपने पिता के

(*ii*) (ग) पिता जी द्वारा सुशीला से तुलना किए जाने के कारण।

(*iii*) (ग) उनका आत्मविश्वास प्रभावित हुआ।

(*iv*) (क) हीन-भावना का प्रभाव।

(*v*) (ख) कथन (A) गलत किंतु (B) और (C) सही हैं।

8. (*i*) (ग) देशभक्ति का

(*ii*) (ग) कथन (A) सही है और कथन (B) उसकी सही व्याख्या है।

9. (*i*) (ग) शिवधनुष तोड़ने वाला उनका सेवक ही होगा।

(*ii*) (क) शिवधनुष तोड़ने वाला उनका शत्रु है।

(*iii*) (ख) बचपन में उन्होंने अनेक धनुष तोड़े, पर किसी मुनि ने क्रोध नहीं किया।

(*iv*) (घ) कथन (A) और कथन (B) दोनों सही हैं।

(*v*) (ग) परशुराम वहाँ उपस्थित सभी राजाओं को मार डालेंगे।

10. (*i*) (घ) कथन (B) और (C) सही हैं।

(*ii*) (क) नदियों के पानी का चमत्कार है।

11. (क) नवाब साहब ने लेखक की संगति के लिए उत्साह नहीं दिखाया होगा क्योंकि शायद उन्होंने अकेले यात्रा कर सकने के अनुमान में किफायत के विचार से सेकंड क्लास का टिकट खरीदा होगा और लेखक के डिब्बे में प्रवेश करने से उनकी एकांत स्थिति में बाधा पड़ गई होगी। इतना ही नहीं उनके हाव-भाव से महसूस हो रहा था कि वे लेखक से बातचीत करने के लिए तनिक भी उत्सुक नहीं हैं।

(ख) बालगोबिन भगत संत कबीरदास के अनुयायी थे। कबीरदास पर उनकी अगाध श्रद्धा थी। वे कबीर को अपना साहब मानते थे और उन्हीं की दी गई शिक्षाओं का पालन करते थे। उनका सब कुछ साहब का था। खेत में जो फ़सल होती थी, वह कबीर के दरबार में ले जाते थे और वहाँ प्रसाद स्वरूप में जो कुछ मिलता था, उसी में अपना गुजारा चलाते थे। वास्तव में कबीर के विचारों पर उनकी अगाध श्रद्धा थी।

(ग) लेखिका के पिता जी लेखिका की बड़ी बहन से उसकी तुलना किया करते थी। सुशीला गोरी, स्वस्थ, और हँसमुख थी और लेखिका काली, दुर्बल व मरियल थी। पिताजी के इस व्यवहार ने लेखिका के मन मे हीन-भावना की ग्रंथि पैदा कर दी थी। पिताजी के शक्की स्वभाव के कारण लेखिका को बड़े होने पर अपने अंदर हीनता नजर आने लगी जिसके कारण उसका आत्मविश्वास खंडित हो गया था।

(घ) भारतीय संस्कृति में प्राचीन काल से ही काशी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। गंगा मैया और बाबा विश्वनाथ मंदिर यहीं हैं। यहीं पर सर्वश्रेष्ठ शहनाईवादक बिस्मिल्ला खाँ ने अपने सुरों को सँवारा है। खान-पान की प्राचीन परंपराएँ और साहित्य व संगीत का अदब काशी में बसता है। यहाँ बड़े-बड़े विद्वान, रामदास जी और मौजुद्दीन खाँ हुए। आज भी काशी संगीत के स्वर पर जगती और उसी की थापों पर सोती है। इन्हीं विशेषताओं के कारण काशी को 'संस्कृति की पाठशाला' कहा गया है।

12. (क) गोपियाँ उद्धव की बातों को कड़वी ककड़ी के समान बताकर उलाहना देती हैं। वे उन्हें कमल के पत्ते के समान अलिप्त एवं तेल की गागर के समान चिकना कहकर उलाहना देती हैं। वे उन्हें 'बड़भागी' कहने के साथ- साथ उन्हें प्रेम से रहित व निष्ठुर कहकर उलाहना देती हैं।

(ख) 'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' पाठ के अनुसार साहस और शक्ति का महत्व विनम्रता के साथ होने पर ही होता है। बिना विनम्रता के साहस दुस्साहस बन जाता है और शक्ति निरंकुशता में बदल जाती है।

कविता में राम को साहस और शक्ति के साथ विनम्र दिखाया गया है जबकि दूसरी तरफ परशुराम में भी साहस और शक्ति है पर वे विनम्र न होकर अहंकारी हैं। यही कारण है कि वे लक्ष्मण द्वारा व्यंग्य के पात्र बनते हैं।

(ग) फागुन मास की प्राकृतिक शोभा देखते ही बनती है। प्रकृति मे सर्वत्र हरियाली छा जाती है। पेड़-पौधे नव-पल्लव एवं पुष्पों से लद जाते हैं। भँवरें गुंजार करने लगते हैं। वातावरण सुगंध से भर उठता है। शीतल, मंद, सुगंधित हवा बहने लगती है। सर्वत्र प्रफुल्लता, उल्लास एवं उत्साह का संचार होने लगता है।

(घ) 'रूपांतर है सूरज की किरणों का। सिमटा हुआ संकोच है हवा की थिरकन का'– इन पंक्तियों का भाव यह है कि फ़सल सूर्य की किरणों का रूपांतर है। सूर्य का प्रकाश पाकर ही पौधे अपना भोजन बनाते हैं और इसी से फ़सल बढ़ती और विकसित होती है। फ़सल को विकसित करने में हवा की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। यह फसल को जीवंतता प्रदान करती है।

13. (क) पिता भोलानाथ से अत्यधिक प्रेम करते थे। उसे सुबह से शाम तक अपने पास रखते और उसका पूरा-पूरा ख्याल रखते, उसके खेलों में शामिल होकर मित्र की भूमिका निभाते किंतु माँ जैसी कोमलता और ममता उनके पास नहीं थी, जिसकी जरूरत उस समय बच्चे को थी। घबराए हुए बच्चे को अंग लगाना, उसको आँचल में छिपाना, आँखों में आँसू भर लाना, लाड़ से गले लगाना जैसे भाव माँ के पास ही होते हैं, जो ऐसी घड़ी में घावों पर महरम जैसे लगते हैं। बच्चे के लिए माँ का आँचल और शांति देने वाला चंदोवा है जिसकी शीतल छाँह तले बालक स्वयं को सुरक्षित महसूस करता है।

(ख) लेखिका को लोंग स्टॉक में घूमते चक्र को देखकर ऐसा लगा कि पूरे भारत की आत्मा एक-सी है क्योंकि उसे बताया गया था कि इसे घुमाने से सारे पाप धुल जाते हैं। गंगा नदी को लेकर भी समस्त भारत के मैदानी इलाकों में यही धारणा है कि गंगा-स्नान से सारे पाप धुल जाते हैं। इस आधार पर कहा जा सकता है कि भारत की समस्त आस्थाएँ, विश्वास, पाप, पुण्य आदि धारणाएँ एक जैसी ही हैं।

(ग) (1)–(*ii*),

(2)–(*iii*),

(3)–(*i*)

(*i*) साहित्य-सृजन में कृतिकार के लिए बाहरी दबाव आंतरिक प्रेरणा का कार्य करता है।

(*ii*) रचना करते समय रचनाकार के स्वभाव और आत्मानुशासन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

(*iii*) अनुभूति का संबंध संवेदना से होता है।

14. (क) **जीवन में लक्ष्य प्राप्ति का महत्व**

मनुष्य एक चिंतनशील प्राणी है। वह हर समय अपने जीवन को लेकर नई-नई कल्पनाएँ करता रहता है और अपने भविष्य को लेकर तरह-तरह के सपने संजोता रहता है। किसी भी व्यक्ति के लिए जीवन में आगे बढ़ने का कोई-न-कोई उद्देश्य अवश्य होना चाहिए। मनुष्य जीवन में सफल होने के लिए अपना कोई लक्ष्य निर्धारित करें और उसको प्राप्त करने के लिए निंरतर प्रयत्नशील और अभ्यासरत रहे। जिस व्यक्ति के जीवन में कोई भी लक्ष्य निर्धारित नहीं होता वह कभी सफल नहीं हो सकता। समय बीत जाने पर वह केवल पछताता रहता है। इसके विपरीत जिसके जीवन में कोई लक्ष्य निर्धारित होता है वह उसे पाने के लिए हर समय प्रयास करता रहता है और अवश्य सफल होता है। लक्ष्य के प्रति दृढ़ निश्चयी होना किसी भी लक्ष्य प्राप्ति का आधार है।

मनुष्य को अपने लक्ष्य की प्राप्ति में चाहे जितना भी संघर्ष क्यों न करना पड़े उसे घबराना नहीं चाहिए बल्कि आशान्वित रहकर आगे बढ़ते रहना चाहिए। यदि किसी भी लक्ष्य को पाने के लिए लगन सच्ची हो तो अंत में वह लक्ष्य जरूर प्राप्त होता है। अतः हमें कभी भी असफलता, पराजय और कष्टों से न घबराकर आगे बढ़ते हुए सदैव अपने सपनों को पूरा करने के लिए प्रयासरत रहना चाहिए।

(ख) **जहाँ चाह–वहाँ राह**

यह सर्वविदित है कि जहाँ चाह होती है वहाँ राह अपने आप ही निकल आती है। 'चाह' से तात्पर्य लक्ष्य से है और 'राह' से तात्पर्य लक्ष्य की प्राप्ति से है। यदि व्यक्ति में लक्ष्य को प्राप्त करने की दृढ़ इच्छा हो तो उत्साह और आत्मबल उसमें स्वतः ही उत्पन्न हो जाते हैं। सच्ची लगन और परिश्रम के बल पर लक्ष्य हासिल हो ही जाता है। सफलता भी उसी व्यक्ति के कदम चूमती है जो कठिनाइयों में भी बिना घबराए अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते हैं। यदि मनुष्य संकल्प कर ले तो उसके समक्ष बड़ी-से-बड़ी चुनौती भी छोटी हो जाती है और सफलता के द्वार खुल जाते हैं। किसी भी लक्ष्य को पाने के लिए कठिन परिश्रम, दृढ़ निश्चय, संकल्प शक्ति एवं आत्मविश्वास की आवश्यकता होती है। जिस मनुष्य में ये सारे गुण होते हैं वह अपने लक्ष्य को प्राप्त करने से कभी नहीं चूकता। इसीलिए कहा गया है कि जहाँ चाह होती है वहाँ राहें निकल आती हैं।

(ग) **सोशल साइट्स : लाभ और हानि**

आज का युग सूचना क्रांति का युग है। आज के तकनीकी युग ने दुनिया को पूरी तरह से बदल दिया है। कंप्यूटर, लैपटॉप और स्मार्टफोन आदि उपकरण समाज के प्रत्येक वर्ग के जीवन का अभिन्न अंग बन गए हैं आज इनकी उपयोगिता बहुत अधिक बढ़ गई है। दूसरे शब्दों में कहें तो अब तकनीकी भारतीयों की जीवनचर्या का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गई है। वैसे तो अब हर वर्ग ही सोशल साइट्स व इंटरनेट का आदि हो चुका है। किंतु विद्यार्थी वर्ग विशेष रूप से इसका आदि है। सोशल साइट्स के अच्छे और बुरे प्रभाव दोनों ही मानव जीवन को प्रभावित करते हैं। सोशल साइट्स पर किसी भी विषय से संबंधित शैक्षिक सामग्री को प्राप्त करना व उसका आदान-प्रदान करना सरल है किंतु यहीं कार्य धीरे-धीरे विद्यार्थी वर्ग को सोशल साइट्स का आदि बना देता है। ऐसा देखा जा रहा है कि आज का युवा अपना बहुमूल्य समय सोशल साइट्स पर व्यतीत करता है। सोशल साइट एक ऐसा माध्यम है जहाँ हर तरह की जानकारी तुरंत मिल जाती है किंतु यह बात भी सच है कि सोशल साइट्स पर सब कुछ अच्छा नहीं होता। इसके कारण कई बार युवा वर्ग गुमराह भी हो जाता है और साइबर क्राइम का शिकार तक बन जाता है। अतः सोशल साइट्स का उपयोग करते समय हमेशा जागरूक रहना चाहिए।

15. परीक्षा भवन

नई दिल्ली

सेवा में

सचिव महोदय,

शिक्षा विभाग

दिल्ली ।

दिनांक : 4 अप्रैल, 20XX

विषय : सार्वजनिक पुस्तकालय खुलवाने के संबंध में।

महोदय,

इस पत्र के माध्यम से मैं आपका ध्यान दिल्ली के अ.ब.स. क्षेत्र की ओर दिलाना चाहती हूँ जहाँ कई अच्छे विद्यालय हैं और उनके अपने पुस्तकालय भी हैं। किंतु हमारे इस क्षेत्र में एक भी सार्वजनिक पुस्तकालय नहीं है। विद्यालय की छुट्टी होने पर यदि हमें किसी संदर्भ से संबंधित पुस्तक की आवश्यकता होती हैं तो हमें कोई सहायता नहीं मिल पाती और हमें निराश होना

पड़ता है। अतः आपसे निवेदन है कि हमारी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए आप हमारे क्षेत्र में एक सार्वजनिक पुस्तकालय खुलवाने की कृपा करें। इससे सभी बच्चों के अंदर शिक्षा के प्रति अधिकाधिक रुचि जागृत होगी।

आशा है आप हमारी इस समस्या का समाधान शीघ्रातिशीघ्र कराने का प्रयास करेंगे।

सधन्यवाद।

भवदीया

दिव्यांशी

अथवा

परीक्षा भवन

दिल्ली

दिनांक : 1 मार्च, 20xx

प्रिय मित्र

सस्नेह नमस्कार!

मैं यहाँ पर कुशल हूँ और आशा करता हूँ कि तुम भी अपने परिवार सहित सकुशल होंगे। मुझे आप सभी मित्रों के साथ बचपन में बिताए दिन बहुत याद आते हैं।

हमारे विद्यालय में प्रत्येक वर्ष वार्षिकोत्सव का आयोजन बड़ी धूमधाम से किया जाता है। इस वर्ष भी यह आयोजन 20 फरवरी, 20xx को संपन्न हुआ। इन कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में दिल्ली के शिक्षामंत्री उपस्थित थे। वार्षिकोत्सव में विद्यार्थियों के द्वारा अनेक रंगारंग प्रस्तुतियाँ दी गईं। कविता प्रतियोगिता, वाद-विवाद प्रतियोगिता और अन्य प्रतियोगिताओं में विजेता घोषित विद्यार्थियों को विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। सभी कक्षाओं में सर्वाधिक अंक पाने वाले विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। हम सबने इस वार्षिकोत्सव का बहुत अधिक आनंद उठाया। मेरा बहुत मन था कि मैं अपना यह अनुभव आप सभी को बताऊँ।

मित्र, बहुत समय से हम मिल नहीं पाए। जल्द ही समय निकल कर मैं तुमसे मिलने आऊँगा।

आपका मित्र

दीपक

16. सहायक प्रबंधक पद के लिए स्ववृत्त

नाम	–	मोहिनी
पिता का नाम	–	रमेश गुप्ता
माता का नाम	–	शिवानी गुप्ता
जन्मतिथि	–	10 फरवरी, 1998
वर्तमान पता	–	य०र०ल० नगर, दिल्ली
स्थायी पता	–	उपर्युक्त
मोबाइल नं०	–	8290xxxxxx
ई-मेल	–	abc@gmail.com

शैक्षणिक योग्यताएँ

क्र०सं०	परीक्षा/डिग्री/डिप्लोमा	वर्ष	विद्यालय/बोर्ड/महाविद्यालय/विश्वविद्यालय	विषय	श्रेणी	प्रतिशत
1.	दसवीं कक्षा	2014	अ.ब.स. विद्यालय, सी.बी.एस.ई. दिल्ली	हिंदी, अंग्रेज़ी, गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान	प्रथम	78%
2.	बारहवीं कक्षा	2016	अ.ब.स. विद्यालय, सी.बी.एस.ई. दिल्ली	अंग्रेज़ी, हिंदी, इतिहास, अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र	प्रथम	80%
3.	बी०बी० ए०	2020	आई०पी० विश्वविद्यालय दिल्ली	फाइनेंस एंड अकाउंटिंग, बिजनेस, मार्केटिंग, ह्यूमन रिसोर्स डवलपमेंट, कम्यूनिकेशन एंड मैनेजमेंट	प्रथम	85%
4.	एम०बी० ए०	2022	आई०पी० विश्वविद्यालय दिल्ली	फाइनेंस एंड अकाउंटिंग, बिजनेस, मार्केटिंग, ह्यूमन रिसोर्स डवलपमेंट, कम्यूनिकेशन एंड मैनेजमेंट	प्रथम	84%

अनुभव

- अ०ब०स० इंटरनेशनल कंपनी में सहायक प्रबंधक के रूप में एक साल का अनुभव।

अन्य योग्यताएँ

- कंप्यूटर का अच्छा ज्ञान और अभ्यास।
- हिंदी तथा अंग्रेजी में 40 शब्द प्रति मिनट से टंकण करने में सक्षम।

उपलब्धियाँ

- स्नातक में प्रथम श्रेणी के लिए पुरस्कृत।
- विद्यालय तथा महाविद्यालय की सेमिनार गतिविधियों में प्रथम स्थान।

मैं प्रमाणित करती हूँ कि आवेदित पद के लिए निर्धारित सभी योग्यताएँ मुझमें हैं। मैं विश्वास दिलाती हूँ कि पूरी निष्ठा के साथ अपना काम करूँगी।

धन्यवाद सहित।

मोहिनी

अथवा

प्रेषक : abc@gmail.com
प्राप्तकर्ता : xyz@gmail.com
प्रतिलिपि (सीसी) : abc@gmail.com
गोपनीय प्रतिलिपि (बीसीसी) : pqr@gmail.com

विषय : ऋण विलोपन करवाने के संबंध में।

प्रबंधक महोदय,

सविनय मैं आपके संज्ञान में लाना चाहती हूँ कि मेरा नाम हर्षिता है। 10 मई, 20xx को मैंने उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु विदेश जाने से पहले आपके बैंक में शैक्षिक ऋण के लिए आवेदन किया था। साथ ही ज़रूरी कागजों की प्रतिलिपि की संलग्न की थी। अभी कुछ पारिवारिक कारणों से मेरा विदेश जाने का कार्यक्रम निरस्त हो गया है। अतः मैं तीन लाख रुपये के ऋण का विलोपन कराने के लिए ई-मेल भेज रही हूँ।

आशा है आप मेरी प्रार्थना स्वीकार करेंगे और मुझे शीघ्र उत्तर देकर ऋण विलोपन की पुष्टि भी करेंगे।

सधन्यवाद

भवदीया

हर्षिता

17.

देशी मुरब्बा

मन ललचाए, मिठास बढ़ाए

देशी मुरब्बे में छिपा है माँ का प्यार

गुणकारी मुरब्बा
ताजे आँवलों
से बना

कीमत ₹ 100 से शुरू

सभी नजदीकी किराने
के स्टोर पर उपलब्ध

250 ग्राम,
500 ग्राम
1 किलो
के पैक में उपलब्ध

अवश्य खाएँ, आँखों की रोशनी बढ़ाएँ
और स्वयं को स्वस्थ बनाएँ।

संपर्क करें : 9872xxxxxx

अथवा

संदेश

दिनांक : 15 जून, 20xx

पूर्वाह्न : 8:00 बजे

प्रिय अनुज

सस्नेह!

यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई कि तुमने राज्य स्तर पर आयोजित वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त कर अपने विद्यालय का नाम रोशन किया है। यह सब देखकर माताजी और पिताजी भी बहुत प्रसन्न हैं। तुम इसी तरह जीवन के हर क्षेत्र में आगे बढ़ते हुए सदैव ही सफलता प्राप्त करो। हमेशा खुश रहो, स्वस्थ रहो और आगे बढ़ते रहो! सुख व समृद्धि की इन्हीं सभी मंगलकामनाओं के साथ तुम्हें तुम्हारी सफलता पर ढेर सारी हार्दिक शुभकामनाएँ ।

तुम्हारी दीदी
वैशाली